पत्र लेखन - अनौपचारिक पत्र

विद्यालय का वर्णन करते हुए अपनी माँ को पत्र लिखिए।

छात्रावास,

क.ख.ग. नगर,

मुरादनगर।

दिनांक ....

आदरणीय माताजी,

सादर प्रणाम,

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ। आशा है वहाँ भी सब लोग कुशलपूर्वक होंगे। आपका पत्र पढ़कर मुझे ज्ञात हुआ कि आप मेरी बहुत चिंता करती है। माँ, जबसे मैं यहाँ आया हूँ, मुझे भी घर की बहुत याद आ रही है। आरंभ में मेरा मन भी यहाँ नहीं लग रहा था। परंतु विद्यालय में इतना काम होता है कि पूरा दिन निकल जाता है।

यहाँ शिक्षण की अत्यधिक आधुनिक तथा उचित व्यवस्था है। खेलकूद और पढ़ाई के साथ विज्ञान, कंप्यूटर की प्रयोगशालाएँ आदि हैं। सभी अध्यापक अनुभवी व अच्छे हैं। सफाई का यहाँ बहुत ध्यान दिया जाता है। छात्रावास में तीनों समय भोजन पकाया जाता है। बच्चों को घुमाने के लिए भी ले जाया जाता है। यहाँ पर मेरे बहुत से नए मित्र बन गए हैं। कमरे में मेरे साथ एक लड़का और रहता है। यह मेरा मित्र बन गया है जिसका नाम अमर है। वह मेरी ही कक्षा का है।

अत: आप किसी प्रकार की चिंता मत कीजिएगा। पिताजी को नमस्कार कहिएगा और गुड्डू को प्यार। अब पत्र समाप्त करता हूँ। आपके पत्र की प्रतीक्षा रहेगी। पत्र अवश्य लिखिएगा।

आपका बेटा,

नवीन

छोटी बहन को वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए पत्र लिखिए।

81, हनुमान रोड़,
नई दिल्ली।

दिनांक: ....

प्रिय रीमा,
बहुत प्यार!

बहुत दिनों से तुमसे बात करना चाह रहा था परन्तु व्यस्तता के कारण नहीं कर पाया। कल पिताजी का पत्र आया, उनसे पता चला कि तुम्हारे विद्यालय में आगामी सप्ताह में वाद-विवाद प्रतियोगिता है। परन्तु तुम इस प्रतियोगिता में भाग लेने से डर रही हो। यह पढ़कर बहुत दुख हुआ। तुम यदि इस तरह प्रतियोगिता में भाग लेने से डरोगी तो कभी आगे नहीं बढ़ पाओगी।

हर विषय में तुम्हारा ज्ञान बहुत अच्छा है। तुम वाकपटु भी हो। तुम्हें पक्ष-विपक्ष में बोलना अच्छा लगता है। घर में ही तुम हर विषय के पक्ष-विपक्ष में बहुत अच्छा बोल लेती हो। तुम बोलना शुरू करती हो तो तुम्हारे तर्कों के आगे हमारे तर्क बेकार लगते हैं। विद्यालय में होने वाली प्रतियोगिता भी तो वैसी ही है। तुम्हें बस आत्मविश्वास से काम लेना है।

आशा करता हूँ कि तुम मेरी बात को मानते हुए बिना किसी भय के वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लोगी और उसे जीत कर भी आओगी। अपने बड़े भाई की तरफ़ से तुम्हें बहुत सारी शुभकामनाएँ।

तुम्हारा भाई,
वीरेन्द्र

बड़े भाई की बीमारी की सूचना देते हुए पिताजी को पत्र लिखिए।

91, सेक्टर-1,
मोती बाग-1,
नई दिल्ली-110021
दिनांक: ....

आदरणीय पिताजी,
सादर प्रणाम!

बहुत दिनों से आपको पत्र नहीं लिख पाया हूँ, उसके लिए क्षमा चाहता हूँ। कुछ दिनों पहले भईया को छात्रावास में मलेरिया हो गया था। मलेरिया के कारण वह बहुत क्षीण हो गए थे। बिस्तर से उठने तक का भी साहस नहीं जुटा पाते थे।

ऐसे समय में मुझे उनके साथ रहना पड़ता था। उन्हें समय-समय पर चिकित्सक के पास दिखाने के लिए भी जाना पड़ता था। चिकित्सक ने उनको पंद्रह दिन तक आराम करने की सलाह दी थी। इसके कारण वह विद्यालय भी नहीं जा पाए। छात्रावास में उनकी सेवा के लिए कोई नहीं था। अत: मुझे भी विद्यालय से अवकाश लेना पड़ा। आपको बताना चाहता था परन्तु भईया ने आपको बताने से मना कर दिया। उनके अनुसार उनकी बीमारी का सुनकर आप सब चिंतित हो जाएँगे।

अब वह पूरी तरह से स्वस्थ हो चुकें हैं। थोड़ी कमजोरी है चिकित्सक ने कहा है, धीरे-धीरे वह भी ठीक हो जाएगी। उन्होंने विद्यालय भी जाना आरंभ कर दिया है। कुछ समय पश्चात विद्यालय की छुट्टियाँ पड़ने वाली

है। अत: हम दोनों साथ ही घर आएँगे। पत्र समाप्त करता हूँ। आने की सूचना पत्र द्वारा शीघ्र ही भेज दूँगा। माताजी को प्रणाम कहिएगा।

आपका पुत्र,
अभिलाष

बहन को फैशन छोड़कर पढ़ाई की ओर ध्यान देने के लिए पत्र लिखिए।

56, समाचार अपार्टमेंट,
फेस-3, मयूर विहार,
नई दिल्ली-110096

दिनांक: ....

प्रिय बहन सीता,
बहुत स्नेह!

कल पिताजी का पत्र पढ़कर ज्ञात हुआ कि तुम्हारा ध्यान पढ़ाई से हटने लगा है। तुम सारा-सारा दिन फैशन की पत्रिका पढ़ने या कार्यक्रम देखने में बिताती हो। घंटे-घंटे सौन्दर्य प्रसाधन का प्रयोग करती रहती हो। नियमित रूप से विद्यालय भी नहीं जाती हो, यह सही नहीं है।

विद्यार्थी जीवन में शिक्षा का विशेष महत्व होता है। उसे पढ़ाई पर अपना पूरा ध्यान केंद्रित करना चाहिए। यही समय होता है, जब हम अपने भविष्य की नींव रखते हैं। तुम अपना बहुमूल्य समय पढ़ने-लिखने के स्थान पर फैशन में और व्यर्थ के क्रियाकलापों में लगा रही हो। यदि तुम इसी तरह पढ़ाई-लिखाई छोड़कर फैशन के नाम पर समय बर्बाद करती रहोगी, तो तुम्हारा भविष्य अंधकारमय हो जाएगा। फैशन करने के लिए तो बहुत समय पड़ा है परन्तु शिक्षा प्राप्त करने का उचित समय यही है। इस तरह के व्यवहार से तुम सबकी आशाओं में पानी फ़ेर रही हो।

आशा करती हूँ कि तुम मेरे इस पत्र को गंभीरता से लोगी और अपना ध्यान अपनी पढ़ाई में लगाओगी।

तुम्हारी बड़ी बहन,
आशा

पर्वतारोहण-संस्थान से प्रशिक्षण लेने के लिए पिताजी से अनुमति हेतु पत्र लिखिए।

देहरादून,

तिथि: ....

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम!

आपके द्वारा भेजा गया पत्र मुझे आज ही प्राप्त हुआ है। घर के विषय में कुशलमंगल जानकर मेरा हृदय प्रसन्नचित हो गया। मैं भी यहाँ भगवान की कृपा से कुशलमंगल हूँ। आगे का समाचार यह है कि हमारे विद्यालय की ओर से दार्जिलिंग में स्थित पर्वतारोहण-संस्थान से प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

इस प्रशिक्षण के द्वारा विद्यार्थियों के अंदर शारीरिक बल व आत्मबल को बढ़ाने का प्रयास किया जाता है। पिताजी यह प्रशिक्षण मेरे आत्मबल को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। आगे चलकर यदि मैं सेना में अपना भविष्य तलाशता हूँ, तो यह प्रशिक्षण मुझे उचित दिशा भी प्रदान कर सकता है। इस प्रशिक्षण को करने हेतु मेरी पूरी कक्षा जा रही है।

इसलिए आपसे मेरी विनम्र प्रार्थना है कि आप मुझे प्रशिक्षण करने की अनुमति प्रदान करें। पत्र समाप्त करता हूँ। माताजी को सादर प्रणाम, रीना को प्यार कहिएगा। आपके पत्र की प्रतीक्षा रहेगी।

आपका आज्ञाकारी बेटा,

गौरव

पिताजी को विद्यालय में अपने मित्रों के विषय में बताते हुए पत्र लिखिए।

छात्रावास,

दून विद्यालय,

देहरादून,

दिनांक: ....

आदरणीय पिताजी,

सादर प्रणाम!

आशा करता हूँ कि घर में सब कुशलमंगल होगा। मैं भी यहाँ कुशलपूर्वक हूँ। छात्रावास में रहते हुए मुझे तीन महीने हो गए हैं। यह समय मेरे लिए बहुत कठिन था। आप लोगों से पहली बार अलग होकर मैं इस छात्रावास और विद्यालय में आया था। मैं यहाँ के जीवन का अभ्यस्त नहीं था। मुझे कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ा। ऐसे समय में मेरे दो मित्रों ने भाई के समान मेरा साथ दिया।

एक का नाम है दीपक और दूसरे का प्रकाश। दोनों कक्षा में प्रथम आते हैं। दोनों ही बहुत बुद्धिमान और स्नेही स्वभाव के हैं। इन दोनों ने इस अपरिचित वातावरण से मेरा परिचय कराया। अब हम तीनों साथ-साथ रहते हैं।

हम प्रतिदिन घंटों बैठकर पढ़ाई करते हैं। सायंकाल में हम साथ-साथ क्रिकेट खेलते हैं। समय मिले तो हम चित्रकारी भी करते हैं। पढ़ते समय आने वाली कठिनाइयों का हम स्वयं ही हल निकाल लेते हैं।

ये दोनों बहुत मेहनती व चुस्त हैं। इन दोनों के पिता व्यवसायी हैं। ये प्रतिष्ठित परिवारों से हैं। इनकी संगत में रहकर मुझे इनसे बहुत कुछ सीखने को मिल रहा है। आप मेरे विषय में चिंता मत कीजिएगा। माताजी को प्रणाम व कविता को प्यार कहिएगा।

आपका पुत्र,

बलराम

विद्यालय से भागने वाले भाई को समझाते हुए पत्र लिखिए।

गुरूकुल छात्रावास,

शिमला,

दिनांक: ....

प्रिय मनोज,

बहुत प्यार!

आशा करता हूँ कि तुम यहाँ सकुशल होंगे। कल पिताजी का पत्र आया था। उनसे मुझे ज्ञात हुआ कि तुम्हारे विद्यालय से प्रधानाचार्य का शिकायती पत्र आया था। उनके अनुसार तुम कक्षा में नियमित रूप से नहीं आया करते हो। पढ़ाई में तुम्हारा मन नहीं लगता है। आए दिन किसी-न-किसी अध्यापक द्वारा तुम्हारी शिकायत की जाती है। इस तरह सबको परेशान करना अच्छी बात नहीं है। तुम्हारे इस व्यवहार से हमें निराश होती है।

भाई, तुम्हारी योग्यता को देखते हुए पिताजी ने तुम्हें दून विद्यालय भेजने का निश्चय किया था। उनको विश्वास था कि वहाँ का शिक्षामय व अनुशासन युक्त वातावरण तुम्हारे गुणों का विकास करेगा। आगे चलकर तुम भविष्य में उनका नाम अवश्य करोगे। उनको तुमसे बहुत आशाएँ हैं।

तुम्हारी पढ़ाई के लिए उन्हें कठिन परिश्रम करना पड़ता है। अपने घर की आर्थिक स्थिति से तुम भली-भांति परिचित हो।

तुमसे मेरी यही राय है कि तुम अपना पढ़ाई में मन लगाओ। वहाँ सबसे मित्रता करो, जिससे तुम वहाँ के वातावरण में सहज अनुभव करोगे। नियमित रूप से अपनी कक्षा में जाओ, देखना एक दिन तुम्हें सबसे बहुत स्नेह मिलेगा।

मुझे आशा है कि तुम मेरी सलाह पर ध्यान देते हुए उसका पालन करोगे।

तुम्हारा भाई,

गौरव

चाचाजी दुर्घटनाग्रस्त हैं, उनके कुशल समाचार जानने हेतु पत्र लिखिए।

बी-52, सागरपुर,

जनकपुरी, नई दिल्ली।

दिनांक: ....

पूज्यनीय चाचाजी,

चरण वंदना!

पिताजी से आपके साथ हुई दुर्घटना के बारे में सुनकर बहुत दुख हुआ। इस घटना के विषय में सुनते ही मेरा दिल कांप गया। यह सुनकर बड़ी राहत मिली कि आप बिलकुल सही सलामत हो।

पिताजी ने बताया कि कल घर आते समय आप सड़क पार कर रहे थे। किसी कार के साथ आपकी टक्कर हो गई चूंकि कार इतनी स्पीड में नहीं थी। अत: आपके हाथ में और कमर पर कुछ चोटें आई हैं। परन्तु सही समय पर चिकित्सा सुविधा मिल जाने से आप अब ठीक हैं। आपकी दुर्घटना के विषय में सुनते ही पिताजी तत्काल घर से निकल गए हैं। मैं भी आना चाहता था परन्तु परीक्षाएँ होने के कारण नहीं आ पाया।

पिताजी के अनुसार जैसे ही मेरी परीक्षाएँ समाप्त हो जाएगी। मैं आपसे मिलने आ जाऊँगा। आप अपना पूरा ध्यान रखिएगा। समय पर दवाइयाँ लेते रहिएगा। परीक्षाएँ समाप्त होते ही मैं आपसे मिलने आऊँगा।

आपका प्यारा भतीजा,

राहुल

मित्र को उसके दादाजी की मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए पत्र लिखिए।

89/9, रमेश नगर,

नई दिल्ली-110015

दिनांक: ....

प्रिय आशीष शर्मा,

बहुत प्यार!

कल मेरी राकेश से मुलाकात हुई, उससे ज्ञात हुआ कि तुम्हारे पूज्य दादाजी का स्वर्गवास हो गया है। यह सुनकर, तो मुझे उसकी बात पर विश्वास ही नहीं हुआ। कुछ दिनों पूर्व जब में तुम्हारे घर आया था, तो वह बिलकुल स्वस्थ्य थे। अचानक ऐसा क्या हुआ कि वह हमारे बीच नहीं रहे। उनके स्वर्गवास से मुझे बहुत धक्का लगा है।

मेरे दादाजी मेरे बचप्पन में ही गुज़र गए थे। मुझे तुम्हारे दादाजी से ही स्नेह मिला। उन्होंने तुम्हारे और मेरे बीच कभी फ़र्क नहीं किया। वह हमारे लिए बहुत प्रिय थे। भगवान की इच्छा के आगे हमें सर झूकाना पड़ता है। यह प्रकृति का नियम है, जो आता है उसे एक-न-एक दिन जाना होता है। हम उनके द्वारा दी गई सीखों से अपने जीवन को सफल बना सकते हैं। यही उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करेगा।

मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

तुम्हारा मित्र,

ऋषि

गर्मियों की छुट्टियों का निमंत्रण स्वीकार करते हुए मित्र को पत्र लिखिए।

8/23, मालवीय नगर,

नई दिल्ली-110017

दिनांक: ....

प्रिय मित्र अतुल,

बहुत स्नेह!

पत्र में तुम्हारा निमंत्रण प्राप्त हुआ। यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि तुमने मुझे अपने घर गर्मियों की छुट्टियाँ मनाने के लिए बुलाया है। मैंने इस विषय में पिताजी से बात की थी। उन्होंने मुझे वहाँ जाने की स्वीकृति दे दी है। यह सब तुम्हारे पिताजी के कारण ही संभव हो पाया है। वह यदि पिताजी से बात नहीं करते, तो शायद मैं नहीं आ पाता। उन्हें मेरा धन्यवाद कहना।

शिमला के बारे में मैंने बहुत कुछ सुना था। इसे देखने का अवसर अब मिला है। हम दोनों साथ मिलकर पूरा शिमला भ्रमण करेंगे। मित्र मैंने यहाँ के काली बाड़ी मंदिर, जाखू हिल, मॉल रोड़, प्रोस्पेक्ट हिल, समर हिल, चैडविक जलप्रपात और लक्कड़ मार्किट के बारे बहुत कुछ सुना है। इन्हें देखने हम अवश्य जाएँगे। 'कालका शिमला ट्रेन' में भी बैठने का अवसर मैं अपने हाथ से जाने नहीं दूँगा।

मैंने अपनी यात्रा की तैयारी भी शुरू कर दी है। मित्र में जून 25 तारीख को यहाँ से निकल पड़ूँगा। तुम मुझे लेने आ जाना। अब मित्र पत्र समाप्त करता हूँ। हम दोनों अब शिमला में ही मिलेंगे।

तुम्हारा मित्र,

रोहन

मित्र को अपने विद्यालय में हुए वार्षिकोत्सव का वर्णन करते हुए पत्र लिखिए।

179, ब्लाक-4,

सेवा नगर।

नई दिल्ली।

दिनांक: ....

प्यारे मित्र सुनील,

स्नेह!

आज ही तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारा हालचाल मालूम हुआ। मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ। मित्र में वार्षिकोत्सव की तैयारियों में व्यस्त था इसलिए तुमको पत्र नहीं लिख सका। हमारे यहाँ पिछले सप्ताह वार्षिकोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया था। एक महीने पहले से ही स्कूल में इसकी तैयारियाँ आरंभ हो गई थी।

पूरे विद्यालय के बच्चों ने इसकी तैयारियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। मुख्य अतिथि के रूप में टी.वी. के प्रसिद्ध अभिनेता को बुलाया गया था। बच्चों ने बड़ा ही सुंदर रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया था। विद्यालय में कुछ विद्यार्थियों को उनके वर्षभर के कार्यों के लिए मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए।

मैंने भी कविता पाठ में हिस्सा लिया था। इसमें मुझे प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था। पत्र समाप्त करता हूँ। मित्र घर में सब बड़ों को मेरा प्रणाम कहना, मीतू को प्यार। तुम्हारे पत्र का इंतजार रहेगा।

तुम्हारा मित्र,

गगन

स्वच्छता का महत्व बताते हुए मित्र को पत्र लिखिए।

220/ए,

रोहिणी,

दिल्ली।

दिनांक ....

प्रिय राकेश,

मधुर स्नेह!

कल तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर पता चला कि तुम्हारे क्षेत्र में महामारी फैल गई है। तुम ठीक हो यह जानकर अच्छा लगा। तुम्हें यह पता ही होगा कि अधिकतर महामारी गंदगी से फैलती है। गंदगी बीमारियों का घर होता है। आसपास का वातावरण यदि साफ़ रखा जाए, तो बीमारियाँ नहीं होती हैं। इसलिए अपने घर एवं अपने आसपास के क्षेत्र में सफाई का ध्यान रखना चाहिए। अपने आस-पड़ोस को भी इस विषय में अवगत कराओ। घर के आसपास पानी व गंदगी इकट्ठी न होने दो।

पूरे मोहल्ले के साथ मिलकर गंदगी को दूर भगाने का प्रयास करो क्योंकि इससे नुकसान हो सकता है। इसकी रोकथाम के लिए यदि प्रयास नहीं किए गए, तो समस्या गंभीर रूप धारण कर सकती है। नगर निगम के अधिकारियों को इस विषय में सूचना दो ताकि वह तुम्हारे मुहल्ले की साफ़-सफाई का ध्यान रखें व समय-समय पर दवाइयों का छिड़काव भी करें।

तुम्हें लगता है कि तुम्हारी तबीयत खराब है, तो तुरंत किसी चिकित्सक को दिखाओ। इन उपायों से तुम बीमारियों को दूर भगा सकते हो। आशा है मेरी बात तुम्हें समझ में आ रही होगी। घर पर सभी को मेरी याद दिलाना व नमस्ते कहना।

तुम्हारा मित्र,

राजन

जन्मदिन पर मित्र को निमंत्रण देते हुए पत्र लिखिए।

ऐ/164,

रचना, वैशाली,

गाज़ियाबाद-201010

दिनांक ....

प्रिय तनुज,

सादर नमस्कार!

पत्र लिखने का कारण यह है कि आगामी महीने में मेरा जन्मदिन है। इस बार माताजी ने निश्चय किया है कि मेरा जन्मदिन बड़े धूमधाम से मनाया जाए। इस अवसर पर उन्होंने एक समारोह का आयोजन किया है। मैं, तुम्हें इसमें भाग लेने के लिए सप्रेम आंमत्रित करता हूँ। समारोह का कार्यक्रम इस प्रकार है-

रात सात बजे .... नृत्य कार्यक्रम और खेल से संबंधित कार्यक्रम

रात नौ बजे .... केक काटने की रस्म

रात्रि दस बजे .... भोज प्रारंभ

मित्र आशा करता हूँ कि तुम इस अवसर पर सपरिवार ज़रूर आओगे। मुझे तुम्हारा इंतजार रहेगा। घर में बड़ों को प्रणाम कहना एवं छोटों को प्यार।

तुम्हारा प्यारा मित्र,

रजत

मित्र के द्वारा भेजे गए उपहार के लिए धन्यवाद करने हेतु पत्र लिखिए।

12, कैलाश नगर,

नई दिल्ली।

दिनांक ....

प्रिय मित्र अविनाश,

सप्रेम नमस्ते!

मेरे जन्मदिन पर विदेश से तुम कैसे सम्मिलित हो सकते हो, अभी इस सम्बन्ध में सोच ही रहा था कि दोपहर की डाक से तुम्हारा उपहार और पत्र प्राप्त हुआ। उसे देखकर बहुत प्रसन्नता हुई।

अविनाश, तुम मुझे विदेश में रहकर भी नहीं भूले हो, तभी तो जन्मदिन से एक दिन पहले तुम्हारा स्नेह भरा पत्र व उपहार मिला। उपहार देखकर मैं हैरान रह गया। तुमने मुझे देश-विदेश की डाक-टिकटों का संग्रह भेजा है, जो मुझे बहुत पसंद आया। तुम्हारे साथ बिताए वे दिन याद आ गए, जब हम मिलकर डाक-टिकटों

का संग्रह बनाने के लिए प्रयासरत थे। उस संग्रह को तुम अपने साथ ले गए थे। मैं ईश्वर से यही कामना करता हूँ कि पिछले दस वर्षों से चल रही हमारी मित्रता हमेशा बनी रहे।

माता-पिता जी तुमको बहुत याद करते हैं। जन्मदिन की पार्टी का विस्तार से विवरण अगले पत्र में लिखूँगा। जब भी भारत आओ, आने की ख़बर मुझे अवश्य देना। अपने माँ-पिताजी को चरण स्पर्श और छोटी बहन को प्यार कहना।

तुम्हारा अभिन्न मित्र,

केवल

मित्र को टी.वी देखने की हानियाँ बताते हुए पत्र लिखिए।

85, इंदिरा पुरी,

नई दिल्ली-110012

दिनांक: ....

प्रिय मित्र दिनकर,

बहुत स्नेह!

मुझे पता लगा है कि तुम अपना अधिक समय टी.वी. देखने में नष्ट कर रहे हो। यह अच्छी बात नहीं है। जहाँ टी.वी. हमारे ज्ञान को बढ़ाता है, वहीं इसे अत्यधिक देखना कई तरह की समस्याएँ पैदा कर सकता है।

अत्यधिक टी.वी देखने से आँखें खराब हो जाती है। हम अपना सारा समय टी.वी. देखने में व्यतीत करने लगते हैं। इस कारण हम पढ़ाई में भी पिछड़ने लगते हैं। खेलकूदों में से हमारा मन हटने लगता है। इससे हमारे शारीरिक और मानसिक विकास को नुकसान पहुँचता है।

टी.वी. मनोरंजन का साधन है। इसे इसलिए बनाया गया है ताकि हम अपने खाली समय में इससे अपना मनोरंजन कर सकें। विद्यार्थी के जीवन में विद्या प्राप्त करना सबसे महत्वपूर्ण होता है।

अत: टी.वी. देखने के स्थान पर तुम अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो। आशा करता हूँ कि तुम अपनी मित्र की सलाह मानोगे और टी.वी. देखने पर अपने कीमती समय को नष्ट नहीं करोगे।

तुम्हारा मित्र,

वैभव

दौड़ प्रतियोगिता का समस्त विवरण बताने हेतु मित्र को पत्र लिखिए।

96/3, शाहदरा,

नई दिल्ली-110032।

दिनांक: ....

प्रिय अंशुमन,

सप्रेम प्यार!

कल मेरे विद्यालय में खेल-प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। हमारे विद्यालय के बहुत से बच्चों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया था। इस प्रतियोगिता में 200, 100 और 80 मीटर की दौड़, खो-खो, कबड्डी, आदि खेलों का आयोजन किया गया था। मैंने भी इस प्रतियोगिता में भाग लिया था। मैंने अपना नाम 80 मीटर की दौड़ के लिए लिखवाया था।

सुबह प्रधानाचार्य जी ने खेल-प्रतियोगिता की शुरूआत की। सबसे पहले 80 मीटर की दौड़ आरंभ की गई। मित्र इस दौड़ में बहुत से बच्चे भाग ले रहे थे। उन्हें देखकर मेरा मन घबरा रहा था। परन्तु मैंने साहस नहीं छोड़ा। दौड़ते समय साँस फूल रही थी लेकिन मैं घबराया नहीं और अंत में पहुँचकर ही दम लिया। मेरा प्रदर्शन इतना प्रभावशाली था कि सबके द्वारा मेरी सराहना की गई। उसके पश्चात सभी खेलों में भाग ले रहे विद्यार्थियों का हमने उत्साह बढ़ाया। मैंने भी अन्य खेलों का खूब आनंद लिया।

अंत में प्रधानाचार्य द्वारा सभी को पुरस्कार वितरीत किए गए। मुझे प्रथम पुरस्कार देते हुए सभी दर्शकों ने मेरा उत्साह तालियों से बढ़ाया। यह क्षण मेरे जीवन में अविस्मरणीय है।

तुम्हारा मित्र,

व्यास

परिश्रम का महत्व बताते हुए मित्र को पत्र लिखिए।

25/356, नज़फगढ़,

नई दिल्ली-110043

दिनांक: ....

प्रिय मित्र गोविंद,

बहुत स्नेह!

आशा है मित्र तुम अपने परिवार सहित कुशल और प्रसन्न होंगे। कल तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। यह जानकर बहुत दुख हुआ कि इस परीक्षा में तुम्हें पचास प्रतिशत अंक प्राप्त हुए हैं। तुम तो बहुत कुशाग्रबुद्धि हो। इतने कम अंक तुम्हें कभी प्राप्त नहीं हुए हैं। अवश्य तुमने परिश्रम करते हुए जी चुराया होगा, अन्यथा तुम्हारा परीक्षा परिणाम ऐसा हो मैं मान नहीं सकता।

परिश्रम किए बिना हम सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। एक सफल व्यक्ति बनने के लिए परिश्रम का हाथ थामना आवश्यक होता है। यदि हम इतिहास को टटोले तो हमें कितने ही महापुरुष मिल जाएँगे, जिन्होंने परिश्रम के बल पर असंभव को संभव कर दिखाया था। महात्मा गाँधी ने आज़ादी प्राप्त करने के लिए परिश्रम नहीं किया होता, तो हमारा देश कभी स्वतंत्र नहीं होता।

अत: तुमसे यही आशा करता हूँ कि तुम अब परिश्रम को महत्व दोगे। पूरे मन से अगले सत्र के लिए अभी से परिश्रम करना आरंभ कर दो। मन लगाकर पढ़ाई करो और अच्छे नम्बरों से पास हो। पत्र समाप्त करता हूँ। घर में सभी बड़ों को मेरा प्रणाम कहना और विवेक को प्यार।

तुम्हारा मित्र,

गणेश

अपने मित्र से उसकी पुस्तकें माँगने हेतु पत्र लिखिए।

सी-7/56, टाइप-1,

किदवई नगर,

नई दिल्ली।

दिनांक: ....

प्रिय मित्र विमल,

बहुत प्यार!

तुम्हें पत्र लिखने का विशेष कारण था। अगले मास से हमारी परीक्षा आरंभ होने वाली है। तुम जानते ही हो मेरे घर की आर्थिक स्थिति कुछ ठीक नहीं है। पिताजी ने जो पुस्तकें दिलाई थी, वे मुझसे कहीं खो गई है। बहुत ढूँढ़ने पर भी मुझे वे मिल नहीं पाईं। दुबारा पुस्तकें खरीद सकूँ, ऐसी मेरी स्थिति नहीं है। तुमने बताया था कि तुम्हारे पास भईया के पिछले वर्ष की पुस्तकें पड़ी हुई हैं। क्योंकि तुमने नई पुस्तकें खरीद ली हैं, तो वे पुस्तकें तुम्हारे काम की नहीं हैं।

मित्र यदि संभव हो सके तो वे पुस्तकें तुम मुझे दे दो। इन पुस्तकों के सहारे में अपनी परीक्षा की तैयारियाँ कर सकूँगा। ये पुस्तकें जहां तुम्हारे लिए व्यर्थ है, वहीं मेरे जैसे विद्यार्थी के लिए अमूल्य वस्तु से कम नहीं है। तुमने मेरे हर बुरे समय में मेरी सहायता की है।

आशा है कि तुम इन पुस्तकों को मुझे दे दोगे। तुम्हारे इस सहयोग के लिए मैं सदैव तुम्हारा आभारी रहूँगा।

तुम्हारा मित्र,

कार्तिक

मित्र की बहन के जन्मदिन सामारोह में आए आनंद को बताने हेतु पत्र लिखिए।

214, हुसैन गंज,

मसूरी।

दिनांक: ....

प्रिय मित्र राजेश,

बहुत स्नेह!

पिछले सप्ताह हम सब तुम्हारी बहन के जन्मदिन के समारोह में आए थे। उस दिन का स्मरण आते ही मेरा मन प्रसन्नता से भर जाता है। उसका वर्णन करने के लिए शब्द नहीं मिल रहे हैं। परन्तु यदि न कहूँ तो यह अपमान होगा।

मित्र, हमें विश्वास नहीं था कि इस समारोह में हम इतना आनंद करेंगे। तुम्हारे पिताजी ने समारोह का बड़ा अच्छा प्रबन्ध किया था। हमारे लिए उन्होंने संगीत और खेलकूद का कार्यक्रम रखा था, जो बहुत ही मज़ेदार था। दो घंटे गीतों में नाचते-नाचते हम थक गए थे परन्तु मन नहीं भर रहा था। वहाँ पर म्यूजिकल चेयर बड़ा मज़ेदार रहा। उसमें सबको ही पुरस्कार स्वरूप कुछ न कुछ दिया गया। तुम्हारी बहन गुलाबी फ्रॉक में परी के समान लग रही थी। उसके जन्मदिन का केक बहुत बड़ा था।

खाने में विभिन्न तरह के व्यजंनों ने तो मानो समारोह में चार चाँद लगा दिए थे। वहाँ रखे व्यजनों में से हमने गुलाब जामुन, जलेबी, रसमलाई, चाउमीन, चाट, डोसा, आइसक्रीम खूब स्वाद लेकर खाए। उसके बाद संगीत की धुनों में हम बहुत देर तक नाचते रहे। इस समारोह की याद हमेशा मेरे मन में रहेगी।

तुम्हारा मित्र,

विशाल

सहायता करने वाले पड़ोसी का धन्यवाद करते हुए पत्र लिखिए।

789/प्रेम नगर,

नई दिल्ली।

दिनांक: ....

प्यारे अंकल,

सादर प्रणाम!

बहुत दिनों से आपको पत्र लिखना चाह रही थी। परन्तु आपका पता नहीं होने के कारण लिख नहीं सकी। आज ही आपका पता प्राप्त हुआ है। मैं आपको पत्र के माध्यम से धन्यवाद करना चाहती हूँ।

मैं आपको कभी भूल नहीं सकती। आपके कारण ही आज में सही सलामत अपने माता-पिता के साथ हूँ। उस दिन जब में घर का रास्ता भूलकर सड़कों पर इधर-उधर घूम रही थी, तो आपने ही आकर मुझे सकुशल घर पहुँचाया था। जबकि आपको किसी ज़रूरी कार्य के लिए जाना था।

माताजी ने मुझे बताया कि मैं बहुत घबरा गई थी, इस कारण बेहोश हो गई थी। स्थिति समझते आपको देर नहीं लगी और आपने मुझे बिना वक्त गंवाए घर पर लाकर छोड़ दिया। ऐसे व्यक्ति आजकल बहुत कम देखने को मिलते हैं।

अंकल, मैं जितना भी आपका धन्यवाद करूँ कम है। आप उस समय मेरे लिए ईश्वर के समान थे। एक बार फिर में आपका दिल से धन्यवाद करती हूँ। आंटी को मेरा नमस्कार कहिएगा और विभा को प्यार। हमारे घर अवश्य आते रहिएगा।

धन्यवाद,

रंजिता